PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 7, ISSUE 3

आदिकाव्य-रामायण

डॉ. आर. डी. पटेल
(संस्कृत विभागाध्यक्ष)
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज विजयनगर
गुजरात भारत

आदि काव्य रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि अदभूत और अलौकिक कवित्व के धनी और ज्ञानी ऋषि थे । वे मात्र आदि कवि ही नहीं, अनेक विषयों के ज्ञाता भी थे । उनकी इस अमर रचना में उनकी अनेकविध प्रतिभाओं के दर्शन होते है । वाल्मीकि का मूल नाम अग्निशर्मा[१] था । एक मान्यता के अनुसार वे भार्गव या प्राचेतस् के रुप में प्रसिद्ध थे । विष्णुपुराण ३/३ के अनुसार वे भृगु के वंशज एवं वैवस्वत मन्वन्तर के चौवीस वें व्यास थे ।[२] कतिपय विद्वान उन्हें वल्मीक नामक मुनि के पुत्र भी मानते है । एक ओर मान्यता के अनुसार उनका मूल नाम रत्नाकर[३] था । उनका जन्म कुलीन ब्राह्मण कुल में हुआ था । उनकी आर्थिक दशा साधारण थी । वे ब्राह्मणपुत्र होने के बावजूद किरातों के साथ पले-बढे थे । इसी कारण कुछ असामाजिक प्रवृत्तियों उनमें घर कर गई थी इसी कारण वे वालिया लूंटेरे के रुप में प्रसिद्ध हुए । परंतु बाद में सप्तर्षियों के मिलन के कारण लूटेरे में से ऋषि बन गये ।[४]

वाल्मीकि रचित रामायण को लौकिक संस्कृत साहित्य का प्रथम ग्रन्थ स्वीकार किया गाया है । वस्तुतः काव्यत्वका प्रारंभ पुराणों के पश्च्यात वाल्मीकि रचित रामायण में ही द्रष्टिगोचर होता है । इसी कारण वाल्मीकि को आदि कवि और 'रामायण' को आदि काव्य कहा जाता है । रामायण अत्यंत लोकप्रिय काव्यग्रन्थ है और यह सत्य घटनाओं पर आधारित है । इसमें सनातन धर्म के साथ मर्यादा

पुरुषोतम श्रीराम के जीवन चरित्र का काव्यात्मक शैली में निरुपण हुआ है । मानवीय संवेदना से आविर्भूत प्रथम साहित्यिक रचना के रुप में रामायण का स्थान अद्वितीय है । इस महाकाव्य में भारतवर्ष की सत्यप्रियता, सदाचार, सभ्यता एवं संस्कृति के दर्शन होते हैं । प्राचीन वैदिक साहित्य ने भारत के जीवनदर्शन के आदर्श को प्रस्थापित किया है, तो वाल्मीकि रामायण ने साहित्यिक आदर्शको प्रस्थापित किया है । यहीं कारण है कि रामायण ने अनुगामी साहित्य और उसके विभिन्न रुपों को प्रेरणा प्रदान की है ।

इस महाकाव्य का आरंभ क्रौंचवधकी मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी घटना से हुआ है । रामायण के बालकाण्ड के प्रथम चार अध्यायों में यह कथा निरुपित हुई है । एक बार तमसा नदी के किनारे वाल्मीकि समिध लेने पहूँचे थे तब उन्होने एक प्रणयरत क्रौंच युगल को देखा, इसी समय एक आखेटक के बाण से एक पक्षी घायल हो गया । अपने प्रियतम को मृत्युशैया पर देखकर क्रौंची करुण विलाप करने लगी । क्रौंची के इस आर्तनाद को सुनकर वाल्मीकिजी का हृदय द्रवित हो उठा । उनके हृदय से निकले शब्द कुछ इस प्रकार थे –

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।

यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।[५]

अर्थात् "हे निषाद ! तु अनंत वर्षो तक अशांत या भटकता रहेगा, क्योंकि तु ने कामक्रीडा में रत क्रौंच युगल में से एक का वध किया है ।" वाल्मीकिजी के मुख से निकला यह अभिशाप जिस श्लोक के रुप में प्रस्तुत हुआ, वह सृष्टि का प्रथम काव्य माना गया । यह श्लोक अनुष्टुप छंद में काव्यबद्ध हुआ इसलिए वाल्मीकिजी को अनुष्टुप छंद का जनक माना जाता है । वैसे अनुष्टुप छंद तो उपनिषदों में भी मिलता है परंतु लौकिक संस्कृत में सम अक्षर से युक्त अनुष्टप का प्रथम प्रयोग वाल्मीकिजीने किया । इसमें लघु-गुरु का निवेश नियमबद्ध था । भवभूतिने इसे 'आम्नायाद अन्यत्र नूतनश्छन्दसामवतारः' ।[६] कहकर वेद से अलग एक नवीन छन्द बताया है ।

महर्षि वाल्मीकि की इस कल्याणमय वाणी को सूनकर स्वयं ब्रह्माजी उपस्थित हुए और उन्होंने वाल्मीकिजी को आदि कवि घोषित करते हुए उन्हें रामायण नामक महाकाव्य की रचना करने का आदेश किया ।[७] ब्रह्माजी के आदेशानुसार वाल्मीकिजीने राम-सीता के उदात्त चरित्र, सीताहरण

एवं रावणवध जैसी अनेक भावपूर्ण एवं मार्मिक घटनाओं को समाहृत करते हुए रामायण नामक महाकाव्य की रचना की है । इसमें कवि ने राम-रावण युद्ध के द्वारा असत्य पर सत्य की विजय एवं अधर्म पर धर्म की विजय को आलेखित किया है ।

समग्र विश्व को नैतिकता का पाठ सिखानेवाले इस महाकाव्य में २४,००० श्लोक हैं । इसी कारण इसे 'चतुर्विशती साहस्त्री संहिता'[८] कहा जाता है । इस महाकाव्य में सात काण्ड है और प्रत्येक काण्ड सर्गो में विभक्त है । सात काण्डों के नाम इस प्रकार है । - (१) बालकाण्ड (२) अयोध्याकाण्ड (३) अरण्यकाण्ड (४) किष्किधाकाण्ड (५) सुंदरकाण्ड (६) युद्धकाण्ड और (७) उत्तरकाण्ड । काण्डों के ये नाम कथा या स्थान के आधार पर निर्धारित किये गये है ।

बालकाण्ड में आलेखित ७७ सर्गो में राम के जन्म, बचपन, किशोरावस्था, विश्वामित्र के साथ जंगल में जाकर राम-लक्ष्मण द्वारा राक्षसवध, यज्ञ रक्षा, सीता स्वयंवर तथा राम सहित चारों भाईयों के विवाह जैसे मार्मिक प्रसंग निरुपित हुएँ हैं ।

अयोध्याकाण्ड में ११९ सर्ग हैं । इस में राम के राज्याभिषेक का आयोजन, इर्षालु रानी कैकेयी द्वारा विघ्न डालना, राजा दशरथ के वचन पालन के लिए राम, सीता और लक्ष्मण का वनगमन, पुत्र वियोग में दशरथ की मृत्यु, ननिहाल से लौटे और समग्र वृत्तांत से अवगत हुए भरत का राज्य का अस्वीकार करना, सेना सहित भरत का चित्रकुट प्रयाण, भरत द्वारा राम की पादु का माँगना, अयोध्या लौटकर भरत का नंदि ग्राम में निवास जैसी घटनाओं का मार्मिक और भावपूर्ण आलेखन हुआ है ।

अरण्यकाण्ड के ७५ सर्गो में राम का सीता और लक्ष्मण सहित दण्डकारण्य में निवास, राक्षसो के साथ हुए संघर्ष, खर-दूषण जैसे अनेक राक्षसों का वध, पंचवटी विधान, शूर्पणखा प्रसंग, रावण का कपट पूर्वक सीताहरण, राम की विह्वलता एवं विलाप जैसे प्रसंगो का निरुपण हुआ है ।

किष्किन्धाकाण्ड में ६७ सर्गो की रचना हुयी है । इस में सीता की खोज में तत्पर बने राम की सुग्रीव के साथ मैत्री, वाली का वध, सुग्रीव का राज्याभिषेक, हनुमान सहित अन्य वानरों का सीता की खोज में प्रस्थान, समुद्र तट पर पहूँचकर हनुमान को समुद्र पार करने के लिये उत्साहित करना आदि घटनाएँ निरुपित हुयी है ।

सुंदरकाण्ड के ६८ सर्गो में हनुमान का समुद्रपार करके लंका पहूँचना, रावण का अदभुत वैभव, हनुमान और सीता की मुलाकात, अशोकवाटिका का ध्वंस, लंका दहन, हनुमान द्वारा सीता को भेट अर्पित करना, राम का संदेश देना और वापस किष्किन्धा नगरी में लौटकर राम के साथ मिलन आदि प्रसंग शब्दबद्ध हुए है ।

युद्धकाण्ड में १२८ सर्ग है । यह काण्ड सबसे बड़ा काण्ड है । राम के द्वारा रावण का वध इस काण्ड की प्रमुख घटना है । इसमें राम और लक्ष्मण अपनी सेना की सहायता से रावण का सपरिवार संहार करते है । लंका में विभिषण का राज्याभिषेक किया जाता है । राम के संदेह को दूर करने के लिए सीता अग्नि प्रवेश करके अपने पतिव्रता चरित्र का प्रमाण देती है । चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण होने पर राम, सीता और लक्ष्मण अन्य वानरों के साथ पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या में पुनरागमन करते है । अयोध्या में भाईयों के साथ मिलन तथा श्रीराम के राज्याभिक्षेक के साथ यह काण्ड पूर्ण होता है ।

उत्तरकाणड में १११ सर्ग है । कुछ विद्वानों का मानना है कि यह उत्तरकाण्ड रामायण की रचना के बाद अस्तित्व में आया है । इस में अनेकविध अवान्तर कथाएँ निरुपित है । इस के प्रथम ३५ सर्गो में अगत्स्य मुनि राम को रावण के वंश, जन्म, पराक्रम और वरदान प्राप्ति की कथा सुनाते है । तदुपरांत सीता विषयक लोकापवाद के कारण राम के द्वारा सीता का त्याग, वाल्मीकि के आश्रम में सीता का आश्रय लेना, वहीं लव-कुश का जन्म होना, राम का अश्वमेघ यज्ञ, लव-कुश का रामायणगान, राजसभा में अपने शुद्ध और पवित्र चरित्र का प्रमाण देती हुयी सीता का रसातल में प्रवेश तथा अन्त में राम का लक्ष्मण सहित स्वजनों के साथ स्वर्गारोहण जैसी घटनाएँ इसमें आलेखित हुयी हैं ।

रायाण महाकाव्य के कथानक को अत्यंत संक्षेप में निरुपित करते हुए एक कविने लिखा है ।

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं कांचनं

वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ।

वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं

पश्चात् रावणकुम्भकर्णहननं एतच्छ्रीरामायणम् ।।[९]

रामायण लोकभोग्य एवं लोकप्रिय महाकाव्य है । इसमें मानवपात्रों के साथ-साथ वानर, भालू, पक्षी, देवता और राक्षसो जैसे अनेक पात्र रामायण में जीवंत हो उठे हैं । इसमें वैविध्यपूर्ण पात्र सृष्टि होने के साथ मानवीय संबंधो तथा पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का निरुपण इतना स्वाभाविक और मार्मिकता के साथ हुआ है कि अत्यंत प्रौढ एवं ज्ञानी मनुष्यों को भी शरुआत से अंत तक बाँधे रखता है । रामकथा विद्वानों की पोथियों में, हवेलीयों में या मठ-मन्दिरों में ही सीमित नहीं रहीं बल्कि रामकथा जहाँ पहूँची वहाँ आम आदमी के जीवन के साथ घुल मिल गयी ।

काव्य स्वरुप की द्रष्टि से रामायण ऐसा प्रथम महाकाव्य है जिस में काव्य की योग्यता, आकर्षकता, सूत्रबद्धता, विशालता जैसे गुण विद्यमान है । स्वयं वाल्मीकिजी ने अपने ग्रंथ रामायण के लिए काव्य,[१०] गीता,[११] आख्यान[१२] तथा संहिता[१३] जैसे शब्दों का प्रयोग किया है ।

रामायण महाकाव्य का मुख्य या अंगीरस करुण है । क्योंकि काव्य के आरंभ और अन्त में करुणरस ही विद्यमान दिखाई देता है । गौण रस या अंगभूत रस के रुप में शृंगार रस का आलेखन हुआ है । राम-सीता और लक्ष्मण-उर्मिला जैसे पात्रों के सन्दर्भ में संयोग और विप्रलंभ शृंगार का निरुपण हुआ है । राम और लक्ष्मण द्वारा राक्षसों का वध तथा लक्ष्मण – मेघनाद, राम-रावण युद्ध के प्रसंगो में वीररस जीवंत हो उठा है । शुर्पणखा के प्रेम प्रसंग में हास्यरस, रावण के कार्यो और उसकी उक्तियों में रौद्ररस, विराध और कबन्ध जैसे राक्षसो के वर्णन में बीभत्स रस, हनुमान के पराक्रमों में अदभुत रस, ऋषि मुनियों के जीवन वर्णन में शान्त रस तथा केवट, शबरी, हनुमान और विभिषण जैसे चरित्रों के अंकन में भक्तिरस दिखाई देता है ।[१४]

वाल्मीकि रचित रामायण महाकाव्य में निरुपित पात्रसृष्टि जीवंत एवं वैविध्यपूर्ण है । राम इस महाकाव्य के नायक है । राम का चरित्र एक आदर्श चरित्र है जिस में अनेक मानवोचित विशेषताएँ विद्यमान हैं । इस महाकाव्य में उदात्त मानवीय भावों का निरुपण हुआ है । कौशल्या का वात्सल्य, राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न का उदात्त भ्रातृभाव, सीता का पातिव्रत्य, हनुमान की स्वामिभक्ति और सेवा, विभिषण की सत्य निष्ठा, रावण की विद्वता, शभरी की भक्ति, अनसूया का उदात्त पातिव्रत्य, अगत्स्य की सांस्कृतिक चेतना आदि रामकथा में गूँथे गये है ।

राम पूर्ण पुरुषोत्तम होने के साथ साथ मर्यादापुरुषोत्तम भी हैं । त्याग, मर्यादा और अहंकार शून्यता उनके जीवन की विशेताएँ है । पिता के वचन के पालन के लिए तथा अपने उदात्त रघुकुल की

परम्परा 'प्राण जाये पर वचन न जाये' को निभाने के लिए अपने अधिकार को छोड़कर वनगमन करते है । राम एक सत्य वक्ता मनुष्य, आज्ञापालक पुत्र और शिष्य, महान पराक्रमी योद्धा, एक पत्नीव्रत धारण करनेवाले पति, प्रजारक्षक राजा और अनूज प्रेमी भ्राता के रुप में चित्रांकित हुए हैं । लक्ष्मण का पात्र त्याग समर्पण और सेवा की प्रतिमूर्ति समान हैं । वे अपनी पत्नी उर्मिला तथा राजमहलों का सुख त्यागकर अपने भाई और भाभी की सेवा करने के लिए राम के साथ वनवास जाते हैं । वन में वे राम और सीता की छाया बनकर परिचर्या करते है । सीता के अपहरण के बाद राम जब लक्ष्मणको आभूषण दिखाते हे तब लक्ष्मण द्वारा दिया गया उत्तर उनके श्रेष्ठ चरित्र को प्रतिपादित करता है ।

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले ।

नुपुरस्तवमि जानामि नित्यं पादाभिवन्दवान् ।।

अर्थात् 'मैं बाजुबन्ध और कर्ण कुण्डल को पहचानता नहीं हूँ परंतु नितप्रति भाभी माँ सीता के चरणों में प्रणाम करने के कारण उनके नूपुर को पहचानता हूँ' ।

सीता का चरित्र एक आदर्श और सहनशील नारी के रुप में निरुपित हुआ है । सीता के पात्र में निरुपित गुणों को देखकर पूरा विश्व उनकी वंदना करता है । सीता एक पतिव्रता स्त्री है । अशोक वाटिका में राम की प्रतिक्षा में अन्न-जलका त्याग करके बैठी हुई सीता को हनुमान मिलते है और राम का संदेश देते है । तत्पश्चात हनुमान कहते है कि मैं आपको अपने कंधे पर बिठाकर श्रीराम के पास ले जाऊँ तब सीता कहती है कि "राम के अतिरिकत किसी भी पर पुरुष के अंग का स्पर्श यह शरीर नहीं कर सकता । सीता सहनशीला नारी भी है, वे राजमहलों का सुख त्याग कर पति के साथ वन में जाकर अनेकविध दुःखों को सहती है । राम के द्वारा सगर्भा सीता का त्याग करने पर वह वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में रहकर दो पुत्रों को जन्म देती है और उन्हें पालती है । सीता स्वाभिमानी भी है । लोकापवाद के कारण अपने चरित्र को पवित्र सिद्ध करती हुयी अपने पति और पुत्रो को छोडकर पृथ्वी में समा जाती है ।"

इस प्रकार इस महाकाव्य में एक आदर्श पिता, आदर्श पति, आदर्श भाई, आदर्श माता, आदर्श सेवक तथा आदर्श मित्र के अनेक पात्र जीवंत हो उठे हैं ।

वाल्मीकि विरचित रामायण भारतीय संस्कृति का आधारस्तंभ है । वह अपने परवर्ती कवियों के लिए उपजीवी काव्य बन गया है । रामायण का आधार लेकर अनेक परवर्ती कवियोंने महाकाव्यों, नाटकों, काव्यों, गद्यकाव्यों और चम्पू काव्यों की रचना की है । जैसे – भास का 'अभिषेक' तथा 'प्रतिमानाटक', भवभूति का 'महावीरचरित' तथा 'उत्तररामचरित', मुरारि का 'अनर्धराघव', राजशेखर का 'बाल रामायण', दिङ्गनाग का 'कुन्दमाला', जयदेव का 'प्रसन्न राघव' आदि नाटक रामायण पर आधारित है । तदुपरान्त महाकवि कालिदास का महाकाव्य 'रघुवंश', कुमारदास का 'जानकीहरण' कवि भट्ट का 'रावणवध', प्रवरसेन का 'सेतुबन्ध' तथा क्षेमेन्द्र का 'रामायण मञ्जरी' रामायण के कथानक पर आधारित है । जैन कवि विमलसूरी द्वारा प्राकृत भाषा में लिखा गया 'पउमचरिअ' (पद्मचरित), रविषेणाचार्य का 'पद्मपुराण' तथा राजा भोज रचित चम्पू काव्य 'रामायण' भी वाल्मीकि के रामायण की कथा पर आधारित हैं ।

इस प्रकार परवर्ती साहित्य पर रामायण महाकाव्य का अमीट प्रभाव देखने को मिलता है । वेदव्यास जैसे महाकवि भी वाल्मीकि को अपना ऋणी मानते है ।

वाल्मीकिगिरि संभूता राम सागर गामिनी ।

पुनातु भुवनं पुण्या रामायणी महानदी ।।

अर्थात् 'वाल्मीकिरुपी पर्वत में से नीकली रामसागर गामिनी, रामायणरुपी महानदी सदियों से समग्र विश्व को पावन कर रही हैं ।'

रामायण महाकाव्य का प्रभाव संस्कृत के अलावा अन्य भाषाओं पर भी देखा जाता है । भारत की विभिन्न आर्य भाषाओं में रामकथा को लेकर अनेकानेक काव्यों की रचना हुई है । इनमें सबसे महत्वपूर्ण है – हिन्दी के महाकवि तुलसीदास का 'रामचरित मानस' । इसे भारतीय समाज में इतना अभूतपूर्व स्थान मिला है कि घर-घर में रामचरित मानस की प्रति मिल जाती है । रामायण महाकाव्य का प्रभाव इतना गँहरा हैं कि भारत की द्रविड भाषाओं – तमिलि, मलियालम, कन्नड और तेलुगु में भी राम कथा पर आधारित काव्य लिखे गये है । इसी कारण कहा जाता है कि 'रम्या रामायणी कथा ।' किसी कविने सच ही कहा है कि -

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।

तावद्रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति ।।[१५]

अर्थात् 'जब तक पृथ्वी पर पर्वत और नदियाँ रहेगी तब तक संसार में रामायण कथा का प्रचार होगा ।'

संदर्भ :

१ सुदर्शन भाटिया, महर्षि वाल्मीकि जीवन और दर्शन, पृ. ३५
२ संपादक - प्रि. पी. आई. पटेल (नि.) बालकाण्ड (सर्ग-१ तः१०) सरस्वती पुस्तक भण्डार, अहमदाबाद, पृ. १२
३ वहीं पृ. १३
४ वहीं पृ. ३१
५ रामायण, बालकाण्ड, सर्ग-२/१५
६ भवभूति, उत्तररामचरितम्, अंक-२, पृ. ३६
७ रामायण, बालकाण्ड, २/३०
८ डॉ. केशवराव मुसलगाँवकर, संस्कृत महाकाव्य की परम्परा, पृ. १२१ तथा डॉ. रमेशशंकर त्रिपाठी, संस्कृत साहित्य का प्रामाणिक इतिहास, पृ. १४
९ संपादक - डॉ. पी. आई. पटेल (नि.) संस्कृत निबंध कौमुदी, सरस्वती पुस्तक भण्डार, अहमदाबाद - १, पृ - ३०
१० रामायण, बालकाण्ड, २/४१, युद्धकाण्ड, सर्ग - १२८/१०५
११ रामायण, बालकाण्ड, सर्ग - ४/२७
१२ रामायण, बालकाण्ड, सर्ग - ४/३२, युद्धकाण्ड, सर्ग - १२८/११८
१३ रामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग - १२८/१२०
१४ डॉ. पुष्पागुप्ता, संस्कृत साहित्य का विशद इतिहास, पृ. १६, १७
१५ रामायण, बालकाण्ड, सर्ग - २/३६